ISSN-2231-2161

कथा क्रम

वर्ष : 21 अंक : 78

अक्टूबर - दिसम्बर 2018

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

कहानियां

12 चन्द्रमोहन प्रधान : जिंदगी नहीं हारती
16 श्रद्धा थवाईत : हाथी के दांत
25 डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी : एहसास
29 महाभूत चंदन राय : श्रीदेवी नारी-चेतना इंटरप्राइजेज
54 विक्रम सिंह : काफिल का कुत्ता
61 डॉ. लवलेश दत्त : नवाब
65 वीणा वत्सल सिंह : बॉडी मसाज
70 विजय कुमार सपाटी : तान्या
74 एंटन चेखव : निंदक
अनुवाद-सुशांत सुप्रिय

लघुकथाएं

28 कमल चोपड़ा : बड़ी गाली
42 सीताराम शर्मा 'चेतन' : हमदर्द
60 रामकुमार आत्रेय : तुम क्या करती
102 मॉर्टिन जॉन : असली बात
107 रामकुमार आत्रेय : दूध का दूध

कथा नेपथ्य

5 मधुरेश : एक लम्बी और खुली बहस का मंच

लेख

39 डॉ. राजकुमार : खोयी हुई परम अभिव्यक्ति
43 डॉ. चंचल बाला : प्रवासी साहित्य और साहित्यकार (प्रमुख महिला कहानीकारों के संदर्भ में)
48 डॉ. राघवेन्द्र मिश्र : नागार्जुन के कथा साहित्य में नारी की स्थिति
51 डॉ. गौरी त्रिपाठी : स्त्री मुक्ति का सशक्त स्वर : थेरीगाथा

कविताएं

77 शंकरानंद : कुछ भी आसान नहीं, पुल के लिए
77 सुभाष राय : देवदूत, स्वागत है सोफिया
79 शेष अमित : विश्रान्ति
79 प्रांजल राय : गिरना एक पुल का

यात्रा-वृत्त

80 मूलचन्द गौतम : वामपंथी रूस के दक्षिणपंथी मार्ग, रूस का इतिहास, भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति और दर्शन, लेनिनग्राद उर्फ सेन्ट पीटर्सबर्ग

समीक्षाएं

90 खिलाफत एक जोखिमभरी साहस कथा (उपन्यास): **रमेश दवे**, वैयक्तिकता और स्थायित्व का द्वन्द्व (उपन्यास) : **पल्लवी मिश्रा**, कुच्ची का कानून (उपन्यास) : **वंदना गुप्ता**, हिन्दी कहानी का नया मूल्यांकन (आलोचना) : **जगन्नाथ दुबे**, अपनी कहानियों में तिलिस्म रचते हैं पंकज सुबीर, 'तन की सारी सुख सुविधा में, मेरा मन वनवास दिया-सा-' (कहानी संग्रह) : **अशोक प्रियदर्शी**।

प्रसंगवश

103 राजेन्द्र सिंह गहलौत : स्त्री यौन स्वातंत्र्य समर्थक लेखन क्या स्त्री हितों के अनुकूल है?
2 सम्पादकीय : वी टू (We Two)
आवरण कलाकृति : प्रियंवदा
रेखाचित्र : अनुभूति गुप्ता

संपादक
शैलेन्द्र सागर
संपादन सहयोग
रजनी गुप्त
सहयोग
मीनू अवस्थी
प्रबन्ध सहायक
राम मूरत यादव
संपादन संचालन : अवैतनिक

संपादकीय सम्पर्क :
डी-107, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006
दूरभाष : 09415243310
e-mail : kathakrama@rediffmail.com
e-mail : kathakrama@gmail.com

इस अंक का मूल्य : 35 ₹
सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक-450 ₹, आजीवन 3000 ₹
संस्थाएं : वार्षिक-200 ₹, त्रैवार्षिक-550 ₹, आजीवन 3500 ₹
(सारे भुगतान मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा कथाक्रम के नाम से किये जायें)
पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, 257- गोलागंज, लखनऊ। फोन : 0522-2200425

स्त्री मुक्ति का सशक्त स्वर : थेरीगाथा

□ डॉ. गौरी त्रिपाठी

आज जब समाज और साहित्य स्त्री अध्ययन और स्त्री मुक्ति की तमाम बुनियादी बातों से जूझ करके आगे बढ़ चुका है, स्त्री आंदोलनों के तमाम चरण लगभग पूरे हो चुके हैं ऐसे समय में हमें थेरी स्त्रियों को याद करना होगा जिन्होंने शुरुआती दौर में ही प्रतिरोध के स्वर स्पष्ट कर दिए थे। स्त्री मुक्ति के बुनियादी स्वरों में हम मध्यकालीन कविता को ही याद करते हैं। उसमें भी मीरा और अंडाल तक ही सीमित रह जाते हैं। आज से लगभग ढाई हजार साल पहले बौद्ध भिक्षुणियों ने थेरीगाथा में अपनी आजादी के गीत गाने की कोशिश की थी-

'कितनी आजाद हूं मैं,
कितनी अनोखी है आजादी
तीन तुच्छ से मुक्त,
मुक्त ओखली, मूसल और अपने टेढ़े मालिक से।'

थेरी गाथाओं की स्त्रियां सपना देखती हैं आजादी का। आजाद तो हम हुए हैं लेकिन किस तरीके से हुए हैं यह और बात है। दरअसल स्त्री की आजादी का मसला व्यवहारिक तौर पर परिभाषाओं से बाहर है। स्त्रियों के प्रति होने वाले अपराध बता रहे हैं कि हम कितने आजाद हैं। स्त्रियों की क्षमताओं में भी इजाफा हुआ है। कहा जाता है कि क्षमताएं मनुष्य में आत्मविश्वास पैदा करती हैं। स्त्रियां भी आत्मविश्वासी हुई हैं लेकिन यही स्त्री समाज के प्रति उपयोगी व सार्थक होने के बावजूद अपराध बोध से भर जाती है यदि वह परिवार व घर के प्रति पूरी तरह समर्पित नहीं होती है। इस भेद को क्या कहा जाए। स्त्रियों के साथ यह बराबरी वाला सिद्धांत नहीं चल पाता है, स्त्री अपनी क्षमता के विकास के बाद भी घर परिवार के प्रति समर्पित ना रहे तो उसे बहुत सफल नहीं माना जा सकता। समाज की इसी सोच को मनुष्य और मनुष्य में किया गया सामाजिक भेदभाव कहते हैं।

आजाद औरत कितनी आजाद है। खाना, कपड़ा, घर बस यही इतनी आजादी? क्या स्त्री बस इतनी ही आजादी की तलबगार है? स्त्री मनुष्य के रूप में स्वीकार ही नहीं है सारी स्त्रियों की आधारभूमि यही है और स्त्रियों को आजादी तो बस इसी मसले पर चाहिए। बात चाहे किसी भी देश की हो जब तक इस लड़ाई की बुनियादी बातों पर विचारकों का ध्यान नहीं जाएगा तब तक इसका हल न तो उग्रवादी नारी आंदोलन दे पाएंगे, ना ही स्त्री पुरुष की प्रतिद्वंद्विता। स्त्री ना तो पुरुष से हीन है ना ही उसे पुरुष की बराबरी करनी है। पुरुष जैसा बनने का सपना भी अप्रत्यक्ष रूप से पुरुष की श्रेष्ठता को स्वीकार करना है। स्त्री खालिस स्त्री होकर भी मानवीय बनी रहे यही उसके जीवन की सार्थकता है। स्त्री अपने स्त्रीत्व को ही और ऊंचा करें यह उस के पक्ष में ज्यादा अच्छा होगा।

स्त्रियों की तारीफ में एक शब्द निकल पड़ा है कामकाजी स्त्री। भला स्त्रियां कामकाजी

युवा लेखिका जिनकी समीक्षायें और लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित। कथाक्रम में पहले भी छपी हैं।

सम्पर्क : सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, शकुन्तला मिश्रा विश्वविद्यालय, लखनऊ।

मो० : 9452206059